484 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 41
पंचम् अंक
दिसम्बर 2018

इस अंक में...

11 सम्पादकीय
12 राष्ट्रीय घटनाक्रम
16 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
23 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
34 नवीनतम सामान्य ज्ञान
41 व्यक्ति परिचय
43 खेलकूद
50 रोजगार समाचार
51 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
55 फोकस– उद्योग 4·0
58 आँकड़ों के आइने में भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली
59 आई.ए.एस. परीक्षा की तैयारी : विभिन्न उम्मीदवार, विविध पृष्ठभूमि; तैयारी की अपनी शैली चुनें
61 युवा प्रतिभाएँ
69 स्मरणीय तथ्य
72 विश्व परिदृश्य
77 सामाजिक प्रगति निर्देशांक, 2018
79 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
82 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएँ
86 विधिक लेख–विधि निर्णय
87 संचार लेख–प्रेस के चार प्रमुख सिद्धान्त
90 प्रतिरक्षा लेख–राफेल सौदे पर उठते सवाल : रक्षा सौदों में पारदर्शी व्यवस्था की दरकार
91 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध–चौथे बिम्सटेक शिखर सम्मेलन में खाड़ी क्षेत्र में सहयोग की नई पहल
94 संवैधानिक लेख–अनुच्छेद 35-क : संविधान का एक अदृश्य हिस्सा
96 सामयिक लेख–राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एन.आर.सी.) : 'नागरिकता पर प्रश्न'
98 पर्यावरण लेख– (कॉप 23) संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन 2017 : कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य एक कठिन डगर
101 जैव-विविधता लेख–आर्द्रभूमि : क्या और क्यों ?
103 निरंकुशता–नियंत्रण लेख–भारत में लोक शिकायत निवारण की दिशा व दशा
106 कृषि लेख–विकसित होती जीनान्तरित फसलें
109 सार संग्रह
113 वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन–(i) आर.ए.एस./आर.टी.एस. (प्रा.) परीक्षा, 2018
127 (ii) मध्य प्रदेश पी.एस.सी. राज्य वन सेवा (मुख्य) परीक्षा, 2018
134 (iii) आगामी राज्य सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2018 हेतु विशेष हल प्रश्न
142 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
144 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
146 ऐच्छिक विषय–अर्थशास्त्र–यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2018
154 वार्षिक रिपोर्ट 2017-18–पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन के क्षेत्रों में अनुसन्धान और विकास के बढ़ते चरण–एक दृष्टि में
157 तर्कशक्ति–आई.बी.पी.एस. (बैंक विशेषज्ञ) मार्केटिंग ऑफीसर (प्रा.) परीक्षा, 2017
161 गणितीय अभियोग्यता–यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड असिस्टेंट (प्रथम चरण) परीक्षा, 2017
164 अपना ज्ञान बढ़ाइए
165 क्या आप जानते हैं ?
166 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक–188
169 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध–केन्द्र में गठबंधन सरकारों का प्रयोग असफल ही रहा है
173 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक–473 का परिणाम
174 English Language–Bank of India Credit Officer Exam., 2018

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

सम्पादकीय

सही रास्ते को पहचानिए

घर्षण (Friction) द्वारा ऊर्जा (अग्नि) की उपलब्धि के साथ विज्ञान का शुभारम्भ हुआ था. अब ऊर्जा की उपलब्धि का माध्यम संयोग (Fusion) है. आदि मानव संघर्षमय जीवन को स्वाभाविक जीवन मानता था. अब वह विश्व-बन्धुत्व, अन्तर्राष्ट्रीयता की परिकल्पना को साकार करने के लिए प्रयत्नशील है. विज्ञान और सभ्यता के विकास की कहानियाँ समान्तर चलती रही हैं. वैज्ञानिक चिन्तन एवं जीवन-पद्धति के मध्य यदि सामंजस्य हो, तो हमारे जीवन में सुख-शान्ति सम्भव है.

हमारे जीवन का संचालन सूत्र इस प्रकार निर्धारित होता है—चेतना प्राणशक्ति द्वारा हमारी ऊर्जा अथवा हमारे भौतिक जीवन का नियन्त्रण करती है. पदार्थ, प्राण एवं चेतना को लक्ष्य करके ही समस्त वैज्ञानिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक चिन्तन-पद्धतियों का विकास हुआ. तीनों के मध्य सामंजस्य स्थापित करके संश्लिष्ट मानव का निर्माण किया जा सकता है. जीवन की विसंगतियों को दूर करने के लिए हमारी चिन्तन-पद्धति और जीवन-शैली के मध्य सामंजस्य स्थापित करना चाहिए. डॉ. आइन्स्टीन के सापेक्षिता सिद्धान्त ने इस प्रकार की परिकल्पना को साकार करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया है.

आधुनिक वैज्ञानिक यन्त्रों के विकास द्वारा ज्ञानेन्द्रियों की कार्य-क्षमता की वृद्धि में प्रयत्नशील है. प्राचीन भारतीय दार्शनिक चेतना के विकास द्वारा उक्त क्षमता का विकास करने के लिए साधना करता था. यही कारण है कि उसके लिए मनीषी होने की अपेक्षा सन्त होना, विज्ञानी होने की अपेक्षा ज्ञानी होना अधिक आवश्यक था. उसके निकट विश्व-बन्धुत्व विवेचन योग्य एक सम्भावना न होकर प्रकृति और जीवनी का एक स्वयं सिद्ध सत्य था. साधन-साध्य की विभिन्नता जीवन को विशृंखलित बना देती है. सन्त और ज्ञानी के साधन-साध्य चेतना-विकास के पर्याय रहते हैं. अतः ज्ञान के क्षेत्र में आरम्भ से अन्त तक जीवनी-पद्धति संश्लेषणपरक बनी रहती है. इसी प्रक्रिया के अन्तर्गत जीवन-कलिका पुष्प रूप में विकसित होकर रंजनकारी स्वरूप की प्राप्ति में समर्थ होती है. विकास की प्रक्रिया के सफल संचालन के लिए यह आवश्यक है कि जीवन में प्रत्येक पग पर पदार्थ, जीवनी शक्ति एवं चेतना की त्रिवेणी का निर्माण और उसमें अवगाहन का निर्वाह होता रहे. कविजन ने कृष्ण-राधा के चरणों के प्रति प्रीति के निर्वाह में इस त्रिवेणी में अवगाहन की परिकल्पना की है.